

[illegible]

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	गुं गा ज्ञान जो अमृत चाखे । एहि मगु पगु कवन फेरि राखे । १९ ।	सतनाम	किछु किछु कह्यो सुधा सम बानी । मुक्ति मूल प्रेम पंथ बखानी । २० ।	सतनाम	प्रेम मूल परमारथ गाई । विमल विमल जस वरणि सुनाई । २१ ।	सतनाम
सतनाम	साखी - ३	सतनाम	ज्ञानी अनन्त लोचन सम, सम दृष्टि सम भाव ।	सतनाम	जरत प्रेम हिया दिया, विमल सदा सत्त भाव ।।	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	जिन्दा रूप मोहिं दरशन दीन्हा । अगम लीला गति केहु केहु चीन्हा । २२ ।	सतनाम	मोहिं पे कृपा कीन्ह बहु भांती । बरिसु सुजल जल साली सुखाती । २३ ।	सतनाम
सतनाम	ज्यों कमल दल जल सो रीती । अति पंकज मानो प्रेम प्रतीती । २४ ।	सतनाम	चरण कमल दल मैं अनुरागी । सदा रहों पद पंकज लागी । २५ ।	सतनाम	भृंगा भाव प्रेम रस माता । जीव ब्रह्म बिच प्रेम सो ज्ञाता । २६ ।	सतनाम
सतनाम	जल बिनु मीन न जीवन हारा । अहो प्राणपति प्रेम अधारा । २७ ।	सतनाम	बाहर भाये मीन नहिं जीवे । उलटी जाय जल तबहीं पीवे । २८ ।	सतनाम	प्रीति सदा गुण गहिर गंभीरा । जल समूह सत सकल शरीरा । २९ ।	सतनाम
सतनाम	कहे दरिया दरशन मन रीता । चरण कमल दल ब्रह्म पुनीता । ३० ।	सतनाम	या तन मन जीव देउ सब वारी । लेहु कृपा करि हाथ पसारी । ३१ ।	सतनाम	तुमते और दूजा नहिं कोई । चरण सदा चित रहों समोई । ३२ ।	सतनाम
सतनाम	प्रगट प्रेम गुण गहिर गंभीरा । सींचेवो सुधा सम सकल शरीरा । ३३ ।	सतनाम	साखी - ४	सतनाम	सुधा सींचेवो शरीर में, वृगसित प्रेम प्रगास ।	सतनाम
सतनाम	मैं तुम दास दर्शन गति, मेटि जाय यम त्रास ।।	सतनाम	चौपाई	सतनाम	प्रीति रीति जेहि सुमति शरीरा । सन्त सदा मति ज्ञान गंभीरा । ३४ ।	सतनाम
सतनाम	सामर्थ्य करहिं सन्त सो रीती । राखाहिं सदा नैन भरि प्रीति । ३५ ।	सतनाम	सुमति करे सुख सदा शरीरा । कुमति बिहाय प्रेम रस धीरा । ३६ ।	सतनाम	प्रेम ना घटे बढे निति अंगा । ज्यों सागर जल होत न भंगा । ३७ ।	सतनाम
सतनाम	सिंधु सुखा न सुना कवि गाई । अति गंभीर गुन तरनि तराई । ३८ ।	सतनाम	वारिध वारि बरोबरि तरनी । जल की प्रीति जात नहिं बरनी । ३९ ।	सतनाम	आपुहिं सिंचि सखा प्रतिपाला । तदपि प्रीति जल काष्ठ तराला । ४० ।	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	हृदये कमल कली प्रीति समाना। छुटेवो तबहिं तन त्यागेवो प्राणा।४१।	सतनाम	ब्रह्म ज्ञान और प्रीति समेता। फिरि मिलिहें तुम चरण पुनीता।४२।	सतनाम	चरण में चित्त चेतनि होय लागा। छुटे कबहीं नहिं भौ अनुरागा।४३।	सतनाम
सतनाम	जगत् धक्का सहे सन्त विवेखी। जिन्ह-जिन्ह चरण कमल दल देखी।४४।	सतनाम	ज्ञान विवेक बिचारहिं ज्ञाता। नाम प्रतीति प्रेम रस माता।४५।	सतनाम	प्रबल माया है मोह विकारा। ज्यों तप्त पर पावक जारा।४६।	सतनाम
सतनाम	नाम सुधा तुम अमृत बानी। पावक जरत बुतावहिं पानी।४७।	सतनाम	दुःख-सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोगा। विरह विषाद तेजि करि जोगा।४८।	सतनाम	साखी - ५	सतनाम
सतनाम	भौ गुण ज्ञान प्रेम गति, तरनि शील सन्तोष।	सतनाम	चढ़ेवो तेज तामस कली, मोह घटा का रोष॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	धन्य भाग्य जो तुम कहं लागा। मातु-पिता सुख-सम्पत्ति त्यागा।४९।	सतनाम	राज-काज सुखा सम्पत्ति नाना। बिना भक्ति बादि सब जाना।५०।	सतनाम	तरुवर छांह थीर नहिं रहई। आवत जात मध्य फेरि कहई।५१।	सतनाम
सतनाम	ऐसी माया है चलन चलाना। आवत जात आपु मन माना।५२।	सतनाम	ऊंच नीच महि मंडल राजा। राव रंक सुखा सकल समाजा।५३।	सतनाम	मरण जीवन फेरि जन्म संयोगा। दुख-सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।५४।	सतनाम
सतनाम	छन्द - १	सतनाम	धन्य सो भाग सोहाग जन को, प्रेम पद अनुरागहीं।	सतनाम	चरण कमल दल प्राणपति को, मूल मंगल गावहीं॥	सतनाम
सतनाम	पुलकि पुलकि तन ब्रह्म सुधा सम, प्राण पिउषन पावहीं।	सतनाम	श्रवण समीप सूचित चित्त धरी, सुनहु सन्त गुण ज्ञानहीं॥	सतनाम	सोरठा	सतनाम
सतनाम	जिन्हि के जस मिलु ज्ञान, तिन्ह तस कह्यो विवेक करि।	सतनाम	चरण कमल को ध्यान, बिरला सकेउ सम्भारि यह॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	अब किछु कहों पन्थ कर भाऊ। जानि बूझि गति ज्ञान प्रभाऊ।५५।	सतनाम	आपन कहा सभे हित लागा। मुक्ति पन्थ बिरला जन जागा।५६।	सतनाम	कह्यो पन्थ सब सन्त संवारी। औ अनेक मुनि कथा बिचारी।५७।	सतनाम
सतनाम	3	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	डंड कवंडल कहा बखानी। जोगिन्ह कहा आपु मत जानी।५८।	सतनाम	मेरु दंड आसन कहं साधी। द्वादश पवन रहे तन राधी।५९।	सतनाम	होखे ज्ञान न आवे जोगा। तन भौ छिन्न व्यापेक रोगा६०।	सतनाम
सतनाम	डंडिन्हि जप तप कीन्ह विधाना। जपे गायत्री सांझ बिहाना।६१।	सतनाम	छव दरशन भेष वैरागी। सुमिरहिं सभे मुक्ति फल लागी।६२।	सतनाम	सेवड़ा और सब जंगम जोगी। आपु आपु मत रहे बियोगी६३।	सतनाम
सतनाम	पंडित समुरहिं वेद पुराना। करम कांडी सभ करे बखाना।६४।	सतनाम	साखी - ६	सतनाम	जोग मत है मुनि मत, सन्त मत ब्रह्म विवेखी।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	कहे मुनि अनेक मत, एक-एक गति देखी॥	सतनाम	निर्गुण सगुण विवेक करि, खोजु मुक्ति का पंथ।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	उलटा पलटा जोति के, सब चाहे चलावन रंथ॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	जैसे द्रुम लता लपटाना। विविध पंथ भेष अरुझाना।६५।	सतनाम	खारी खांड एक मोल आना। केशरि कुसुम एक सम जाना६६।	सतनाम	रूपा रांगा निरखि बनि आवै। समुझि ज्ञान पद पंकज पावै।६७।	सतनाम
सतनाम	कनक पीतर के एक शरीरा। पारस करे सो ज्ञान गंभीरा।६८।	सतनाम	पतिवरता और बहुत भतारी। सानहिं सभे एक व्यभिचारी।६९।	सतनाम	सतगुरु शब्द विवेक विचारी। विवरण करो ज्ञान निरुआरी।७०।	सतनाम
सतनाम	जाते होय मुक्ति फल काजू। बैठि अमर पुर अटल राजू।७१।	सतनाम	जरा मरण नहिं जन्म संयोगा। प्रेम प्रीति हौ विमल विरोगा।७२।	सतनाम	खोजहु सतगुरु सो पन्थ लागा। पीयहु सुधा सम प्रेम सुभागा।७३।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी - ८	सतनाम	पीयहु सुधा सम ज्ञान रस, सुन्दर सुभग शरीर।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	भजसि काहे नहिं प्रेम पंथ, दया सिन्धु के तीर॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	पुरुष पुरान अछै सम तूला। छोड़ी अनंत एक गहु मूला।७४।	सतनाम	कमल सुमंडित परसु सुभागा। मूल शब्द प्रेम अनुरागा।७५।	सतनाम	सतगुरु चरण रहो लवलीना। विधि न अनेक पाप होय छीना।७६।	सतनाम
सतनाम	अध पातक सब जात ओराई। परसहु प्रेम प्रीति लव लाई।७७।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	भर्भ विरोध तेजहु जग माहीं। वाद विवाद काम कछु नाहीं।७८।	शीतल अमी सदा सुख माहीं। बोलहिं विमल रस बैन सोहाहीं।७९।	सन्त सनेह निजु समय संयोगा। मिलहिं विहंसि हंसि प्राण वियोगा।८०।	कुमति काल सभ जाय बिगोई। पद पंकज गति हृदय समोई।८१।	तेजि चतुरपन प्रीति लगाई। मानो सुधा समेत सोहाई।८२।	छन्द - २	
सतनाम	ज्यों मराल विवरण गती, नीर क्षीर बिलगावहीं।	पाय विमल पद ज्ञान सुधा सम, प्राण प्रेम रस चाखहीं॥	देखि देखि सभ अगम निगम गति, सो सुख पंथ सोहावहीं।	प्राणपति प्रिय ज्ञान रतन गति, गगन मगन झरि आवहीं॥	सोरठा - २		
सतनाम	कहे दरिया करु प्रीति, सत्तनाम निश्चय गहो।	चले सो भौजल जीति, पद पंकज लोचत रहो॥	चौपाई	येहि बीसु पन्था अहे बहुतेरा। सुमझि ज्ञान निजु करो निमेरा।८३।	होखो सन्त विवेकी ज्ञानी। मुक्ति पन्था लेत पहचानी।८४।	माटी मन्दिर कनक मढ़ि घेरा। खोदत निकले खाक के ढेरा।८५।	अकरम करम काम अरुझाना। कलई के काम अन्त बिलगाना।८६।
सतनाम	कनक दिवाल मढ़ि मिट्टी लेवारा। तामे निकले कनक सुधारा।८७।	जो जन चाहे मुक्ति विलासा। तौलि ज्ञान निजु करे निवासा।८८।	तूनी रंग कपड़ा बोरी डारा। केशरी पटतर देहिं गवारा।८९।	सो केशरी सब जग नहिं देखा। अवर फूल सब विविधि विसेखा।९०।	कीन्हों पन्था विविधि प्रकासा। मुक्ति पन्था सतगुरु के पासा।९१।	सो सतगुरु सत पन्था निनारा। और ज्ञान गमि जगत् पसार।९२।	साखी - ६
सतनाम	प्रेम ज्ञान जब उपजे, चले जगत् कह झारी।	कहे दरिया सतगुरु मिले, पारख करे सुधारी॥	चौपाई	ज्ञान गमी जेहि होय शरीरा। पारख करे सो ज्ञान गंभीरा।९३।	ज्यों नग लाल चीन्हे चित लाई। महंगे मोल मनि मानिक पाई।९४।		
सतनाम							

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सो हीरा सभ जग नहिं खानी। यह पारख बुझे कोई ज्ञानी।६५।	देखत छोट सुबुक जो जानी। अति अतीत गुण करो बखानी।६६।	और फिटिक बहुते जग माहीं। तेहि पटतर कोई तूलत नाहीं।६७।	जब लगि ज्ञान गमी नहिं होई। तब लगि पारख करे ना कोई।६८।	मणि माणिक मति अन्ध न देखा। कोटि ज्ञान कहि शब्द विवेखा।६९।	ज्यों मानिक महि भरि गौ छारा। लीन्ह हाथ फेरि डारु गंवारा।७०।	सुनत ज्ञान निकट चलि आवै। लहवट ज्ञान जल जाय बुतावै।७१।
हृदय कठोर पत्थल का रेखा। बरिसु सुजल घर बहुत सुलेखा।७२।	साखी - १०					
तनिक प्रेम नहिं भीजहि, जड़ हित भक्ति बेकार।						
सो खग कारण कवन है, जो बोलत सगुन विचार॥						
चौपाई						
लघु पतन का बोलहिं बानी। सगुन विवेक विचारहिं ज्ञानी।७३।	सो कवि कहेवो वचन अति नीका। बिना विवेक भेष सब फीका।७४।	हिम संग जो बहे अनीला। द्रुम छोड़ी का मारहिं शीला।७५।	जो नर बिषै कुमति रस घेरे। ता सिर कर्म काल निति हेरे।७६।	कर गहि व्याधे चाँप सर जोरा। सनमुख सावज कौन निहोरा।७७।	जाकी बुद्धि भ्रम होय जाई। सो न ज्ञान गति काहु लखाई।७८।	जनु दह कमल फूला है केता। तेहि महं उगेव भान एक सेता।७९।
अलि पंकज से परा भुलाई। विषि माला महं पैठा जाई।८०।	पैठत प्राण विकल होय जाई। भली बुद्धि पै काह भुलाई।८१।	कमल छोड़ि विषि परसे कोई। अमी पदारथ पदहिं विगोई।८२।	ज्यों दीपक रोशन कर दीन्हा। बहे समीर खंडित करि लीन्हा।८३।	जबहिं पवन जो बहे सुधारा। दीपक छीन भया अंधियारा।८४।	रहा दीपक सो गया बुझाई। अन्ध धुन्ध कछु नजरि न आई।८५।	काम लहरि जाके तन आवे। ज्ञान दीपक कहं जाय बुझावे।८६।
अन्ध धुन्ध होय सकल शरीरा। उड़ि पतंग दीपक के तीरा।८७।	जीव ब्रह्म माया बिच साना। ज्यों द्रुम करि लता लपटाना।८८।	साखी - ११				
योगी या तन कसि के, रहे जक्त कहं त्यागि।						
बिरला बांचे लपट से, रगरि काठि की आगि॥						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	जापर कृपा कीन्ह कृपाला। सो जन बांचहिं जाल जंजाला।११६।	सतनाम	सामर्थ्य जेहि चितवहिं चितलाई। सो जन कर्म काल नहिं खाई।१२०।	सतनाम	जाके सतगुरु दीन दयाला। मेटहिं कष्ट दुःखा यमजाला।१२१।	सतनाम
सतनाम	ताकर विघ्न होय सभ हानी। पावे प्रेम सुधा रस बानी।१२२।	सतनाम	अभी प्रेम रस चाखो सोई। चरन कमल दल रहे समोई।१२३।	सतनाम	सत्तनाम के लेई उसासा। पुलकित प्रेम नाम प्रकाशा।१२४।	सतनाम
सतनाम	सुधा समेत विमल रसव बानी। प्रेम प्रीति निजु विहित बखानी।१२५।	सतनाम	साखी - १२	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सत्तनाम निजु प्रेम रस, सतगुरु प्रेम प्रतीत।	सतनाम	कहे दरिया जन निजपुर, जाय सो भवजल जीत॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
सतनाम	जग की प्रीति चित्र का रेखा। मोहनी प्रीति जक्त सभ देखा।१२६।	सतनाम	ब्रह्मादिक सनकादिक आदी। सत्त बात कहे सो वादी।१२७।	सतनाम	इन्द्र समान को कहिये वीरा। गौतम धरणी ते रस क्रीडा।१२८।	सतनाम
सतनाम	अहे अहिल्या सुन्दर नारी। कष्ट चन्द्रमा बात बिगारी।१२९।	सतनाम	पतिवरता पतिव्रत जो करई। इन्द्र जाय बरत जो टरई।१३०।	सतनाम	गौतम ताके दीन्हों श्रापा। सो जाने नर ऐसन पापा।१३१।	सतनाम
सतनाम	लागेवो प्रीति जो त्यागेवो जोगा। कहि न जात मनसा मन भोगा।१३२।	सतनाम	छन्द - ३	सतनाम		सतनाम
सतनाम	ज्यों कमल भंवर बिसारि के, चित्त चरण प्रीति न लावहीं।	सतनाम	माया प्रबल कर्म कली है, नाम मनी विसरावहीं॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम	भव भर्मि, भटके अटकि लटके, शीश धुनि पछतावहीं।	सतनाम	कइ कल्प कलपे अल्प जीवन, चरख चढ़ि फल पावहीं॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	सोरठा - ३	सतनाम		सतनाम
सतनाम	जीव ब्रह्म कहं देख, बीचे माया मद सनी।	सतनाम	यह वह एकै लेख, कनक बीच ज्यों है कनी॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
सतनाम	महादेव संग अहे भवानी। मृग नयनी और कोकिल बानी।१३३।	सतनाम	नखा सिखा सुन्दरि चित्र उरेहा। अहे पद्मिनी सुन्दर देहा।१३४।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	7	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

[illegible]

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	नख सिख ले सभ भूषण बनाई। बसन झला झलि पेन्हे आई।१६१। ऋषि तब ध्यान छोड़ि के ताका। नैनन्हि तीक्ष्ण भौं हें बाँका।१६२। भुजा उठाय जो लीन्ह बोलाई। काम बाण लागा तन आई।१६३। आवत निकट जो बदन निहारा। देखत नैन बान सर मारा।१६४।	सतनाम	साखी - १४ बहुत प्रीति करि बोलेवो, निकट जो लीन्हा बोलाय। पट डारि बैठे के दीन्हों, रुचि रुचि १६७वचन सोहाय॥ चौपाई ता सँग प्रीति कीन्ह लव लीन्हा। बिसरि गया जनु योग न कीन्हा।१६५। सात मास रहु ताके संग। नित नित प्रीति करहिं प्रसंगा।१६६। एक दिन खटपट बोली बानी। ऋषि तब प्रीति थोर कै जानी।१६७। तुरत जाय कीन्हों स्नाना। जहाँ पुष्प तहँ कीन्ह पयाना।१६८। तब तो फूल हाथन्ह में आई। अब तो दूरि भेट नहिं जाई।१६९। तुरंत गये मोहनी रहु जहवाँ। बोले विकल वचन यह तहवाँ।१७०। नेम करहिं हम नित स्नाना। पुष्प लेई हम करहिं विधाना।१७१। सो कानन हम फूल के गयऊ। डार नजदीक भेट नहिं जानी।१७२। तब मोहिनी अस बोली बानी। सात मास पूजा नहिं जानी।१७३। आजु कवन व्रत तुम ठानी। बोलि वचन अस कहेउ गुमानी।१७४। मन प्रपंच ऋषि क्रोध नयन महँ ताका। देखत गर्भपात भौ वाका।१७५। मोहिनी चलि आई आपु ठिकाना। बहुरि योग फिरि कीन्ह विधाना।१७६।	सतनाम	साखी - १५ कहे दरिया जग जाने, सो ऋषि काम अधीन। बिरला बांचे मोह वश, रहे नाम लवलीन॥ चौपाई जोर जोराफा प्रीति जो लागा। रज विन्द अंडुज फिरि जागा।१७७। वोहि में नयन पंख भौ झारी। फेरि चला वह प्रीति सुधारी।१७८। ऐसी प्रीति जगत महँ कीन्हा। तनिक बिलगि फेरि होहिं अधीना।१७९। जीव जन्तु जहाँ लगि बोला। सबकी प्रीति काम संग डोला।१८०। जो बांचे सो ब्रह्म स्वरूपा। पाप पुण्य नहिं अविगति रूपा।१८१।	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	चौरासी कबहीं नहिं जाई। गर्भ वास नहीं जाय नसाई।१८२।	सतनाम	जो बांचे सो होय ब्रह्म ज्ञानी। ब्रह्म ज्ञान दृढ़ कहों बखानी।१८३।	सतनाम	साखी - १६	सतनाम
सतनाम	दर्पण दाग न लगाई, नयन रहे भरिपूर।	सतनाम	ऐन ऐना में दीसे, कहे दरिया सोई सूर॥	सतनाम	छन्द - ४	सतनाम
सतनाम	सभ तेजि राज समाज जग को, भक्ति दृढ़ता लावहीं।	सतनाम	गहिर ज्ञान अमान निर्गुन, मुक्ति को फल पावहीं॥	सतनाम	मूल महिमा गगन झरि तहाँ, फूल परिमल आवहीं।	सतनाम
सतनाम	तहां उदित ब्रह्म पुनीत जगमग, प्रेम मंगल गावहीं॥	सतनाम	सोरठा - ४	सतनाम	सतगुरु चरण सनेह, करो भक्ति दया धरो।	सतनाम
सतनाम	प्रेम प्रीति निजु नेह, भव सागर तरि जाइहौ॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	अमर कोस के दोष न लागा। मृगा माति आपु तन त्यागा।१८४।	सतनाम
सतनाम	माया दोष देइ जनि कोई। जानि बूझि के बाउर होई।१८५।	सतनाम	विष अमृत रहे एक पासा। बिलगि गुन होय करे निवासा।१८६।	सतनाम	मलयागिरि बसि रहे भुअंगा। विष अमृत बसे एक संग।१८७।	सतनाम
सतनाम	सो परिमल तन मानुष लावै। शीतल अंग बहुत सुख पावै।१८८।	सतनाम	तन के तप्त दूरि सभ जाई। गन्ध सुगन्ध डाक सभ धाई।१८९।	सतनाम	सो भुअंग जब डसेवो शरीरा। प्राण विकल तनिको नहिं थीरा।१९०।	सतनाम
सतनाम	रहे समीप भेद नहिं पावै। त्यों नर निकट नाम बिसरावै।१९१।	सतनाम	गुण ऐगुण सकल घट बासी। सतगुरु से तब ऐगुण नासी।१९२।	सतनाम	अनल उसृष्टि घेरे जब आई। अंचल दे मुख नयन बचाई।१९३।	सतनाम
सतनाम	भया विकल लागे जब तीता। बिलगि भै गुन भै गौ हीता।१९४।	सतनाम	ऐगुन त्यागि भया पुनि मीठा। देखि देखि तापे नयन भरि दीठा।१९५।	सतनाम	साखी - १७	सतनाम
सतनाम	विष अमृत विवरण करो, है सब सकल खमीर।	सतनाम	सो बुझे जेहि ज्ञान होय, उपजे प्रेम शरीर॥	सतनाम	10	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	ज्यों वारिधि जल गहिर गंभीर गंभीरा। तामे लाल अनेकन्हि हीरा।१९६।	सतनाम	बड़ा सोई जेहि बड़ी बड़ाई। सकल सृष्टि जल ताहि समाई।१९७।	सतनाम	सो जल घटे बढ़े नहिं भाई। ऐसो सन्त सदा सुखदाई।१९८।	सतनाम
सतनाम	मरिजीवा जब तन कहँ त्यागा। पैठि पताल लाल कहँ लागा।१९९।	सतनाम	भौ अन्देशा जल महँ गयऊ। नग ले हाथ बाहर फेरि अयऊ।२००।	सतनाम		सतनाम
			साखी - १८			
सतनाम	मारेवा गोता गम्भीर जल, ले निकला फेरि लाल।	सतनाम	देखत जगत नयन भरि, है लाखों की माल॥	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	ऐसी भक्ति है पन्थ निनारा। या तन त्यागि जो पन्थ सुधारा।२०१।	सतनाम	जब लगि प्रेम आपु नहिं जागे। ज्ञान कहे कहवाँ सुख त्यागे।२०२।	सतनाम	पहिले तन मन या जीव वारे। पीछे प्रेम पन्थ पगु ढारे।२०३।	सतनाम
सतनाम	का भौ ज्ञान कथे बहुतेरा। जौ लगि दृष्टि गगन नहिं हेरा।२०४।	सतनाम	अमृत प्रेम देखो नहिं नैना। तब लगि काह कहे मुख बैना।२०५।	सतनाम		सतनाम
			साखी - १९			
सतनाम	जब लगि प्रेम न पाइया, तब लगि पिया न नेह।	सतनाम	प्रेम सुरति साचो बसे, मिलि गौ शब्द स्नेह॥	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	ऐन पैठि जब देखि अंजीरा। सुरति झरोखा अहे शरीरा।२०६।	सतनाम	ऐन अंजीर एक करु मेला। देखाहु अविगति आपु अकेला।२०७।	सतनाम	आपहिं गुरु आप है चेला। आपहिं ब्रह्म ज्ञान संग मेला।२०८।	सतनाम
सतनाम	आपहिं गूंगा आपहि बोले। आप अकेला जग महँ डोले।२०९।	सतनाम	आपा मेटि आप कहँ देखो। दूजा नाम ताहि कहँ लेखो।२१०।	सतनाम	पिये प्रेम होय मस्त दीवाना॥ राव रंक एक सम जाना।२११।	सतनाम
सतनाम	जियते मुक्ति जाने सो ज्ञानी। भौ जल लाँघ चले सो प्राणी।२१२।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
			साखी - २०			
सतनाम	भौ जल अगम गम्भीर है, बहे कहंर दरियाव।	सतनाम	नाम जहाजे चढ़ि के, गया अमरपुर गाँव॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	अब कहों पृथ्वी कर लेखा। जो कछु ज्ञान गमि महँ देखा।२१३।	सतनाम	सतपुरुष मिले मोहिं आई। आदि अन्त सब कथा सुनाई।२१४।	सतनाम	ओन्चास कोटि पृथ्वी कर भाऊ। तामें बसे अनेकन्हि राऊ।२१५।	सतनाम
सतनाम	तामें कहिये जो सागर साता। नदी अनेक गने को ज्ञाता।२१६।	सतनाम	तामें फूल विटप बन झारी। फूल अनेक को कहे सँभारी।२१७।	सतनाम	तामें फल मेवा सब खानी। अमृत रस रसना जो जानी।२१८।	सतनाम
सतनाम	तामें पाहन भिन्न-भिन्न खानी। लाल सफेद फिटिक जो जानी।२१९।	सतनाम	सुर्खा स्याह जर्द की खानी। गुप्त धातु काढ़ि जब आनी।२२०।	सतनाम	राव रंक औ वर्ण विशेषी। दुःखी सुखी अनेकन्हि लेखी।२२१।	सतनाम
सतनाम	ऊँच नीच महि मण्डल झारी। दुःख सुख भोग करहिं नर नारी।२२२।	सतनाम	रंग राग कहि पढ़े पुराना। उठी प्रात देहिं कहिं दाना।२२३।	सतनाम	नाना रंग विविध यह बानी। भौ सागर की अकथ कहानी।२२४।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी - २१	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	जल थल धरती सघन वन, सागर अगम गंभीर।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	केते कविता होय गये, हृद दरिया के तीर॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	छन्द - ५	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	सब कहत कहि कहि ज्ञान महिमा, मूल निगम न पावहीं।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	वेद शास्त्र विविधि बानी, अनन्त कहि कहि गावहीं॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	कहि कहत अगम अगाध कथनी, वार न पावहीं।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	सूक्ष्म भेद निज ज्ञान सतगुरु, सहज पन्थ बतावहीं॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	सोरठा - ५	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	सतगुरु शब्द विवेक, पद पंकज चित्त में सनी।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	काटु कर्म का रेख, उज्ज्वल दशा गुन गनी॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
सतनाम	अंडज पिंडज उखामज झारी। कहि न जात विविध विस्तारी।२२५।	सतनाम	अवनि पताल गगन विस्तारा। चाँद सूर्य महि मण्डल तारा।२२६।	सतनाम	को कहि सके ज्ञान मुख बानी। कहि कहि थाके वेद बखानी।२२७।	सतनाम
सतनाम	ब्रह्मा थाके कहि मुख बानी। चारि वेद कवि कथा बखानी।२२८।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	12	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सनकादिक आदि ले कहिया। कहि कहि थाके बानी तहिया।२२६।	सतनाम	गौरि गनेश और शंकर योगी। थाके फिरहिं ज्ञान रस भोगी।२३०।	सतनाम	थाके व्यास जिन्ह वेद बखाना। पुराण अठारह कीन्ह विधाना।२३१।	सतनाम
सतनाम	थाके शेष सहस्र मुख बानी। भारद्वाज मुनि कथा बखानी।२३२।	सतनाम	कश्यप मुनि मुनिह के राजा। कथेवो ज्ञान मुनि मन्त्र समाजा।२३३।	सतनाम	मारकण्डेय अकथ कहि बानी। सप्त ऋषि मुनि कथा बखानी।२३४।	सतनाम
सतनाम	नारद कहेवो भक्ति सभ जानी। ब्रह्म ज्ञान सुखदेव बखानी।२३५।	सतनाम	बालमीकि रामायण कहिया। अगुमन कथा राम के जहिया।२३६।	सतनाम	दत्तात्रेय दश पन्थ उचारा। दश पन्थ कीन्ह विस्तारा।२३७।	सतनाम
सतनाम	आदि सिद्धि जो गोरख ज्ञानी। कहेवो सिद्धि सब योग बखानी।२३८।	सतनाम	कथेवो कबीर ज्ञान का मूला। चारि वेद ताहि नहिं तूला।२३९।	सतनाम	पण्डित मुनि भक्त सब ज्ञानी। कहों कहाँ ले कथा बखानी।२४०।	सतनाम
सतनाम	साखी - २२					सतनाम
सतनाम	कहेवो ज्ञान जगत सब, वेद विदित सब जानी॥					सतनाम
सतनाम	मुक्ति पन्थ सतगुरु बिना, नहीं परा पहचानी॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	अब कहों सब लोक बखानी। साहेब संग भेद जो जानी।२४१।	सतनाम	साहेब सत्त जो कहा बखानी। छप लोक की महिमा जानी।२४२।	सतनाम	छप लोक तीनि लोक ते न्यारा। साहेब कहेवो भेद टकसारा।२४३।	सतनाम
सतनाम	सब सुख साहेब कहा बखानी। अमर लोक की महिमा जानी।२४४।	सतनाम	दया सिन्धु सुख सागर खानी। अविगति रूप किमि कहों बखानी।२४५।	सतनाम	अति गम्भीर गुन विमल पुनीता। सुख सागर दया सिन्धु अनूपा।२४६।	सतनाम
सतनाम	यह जनि जानहु मन की उक्ति। साहेब सदा प्रेम जन युक्ति।२४७।	सतनाम	साहेब भेद लोक कहि दीन्हा। मूल ज्ञान निश्चय लिखि लीन्हा।२४८।	सतनाम	जो कछु देखा लिखा सोई भाषा। ज्ञान दीपक उर अन्तर राखा।२४९।	सतनाम
सतनाम	जबहीं दीपक बरे उजियारा। ज्ञान दृष्टि सब कथा पसारा।२५०।	सतनाम	ज्ञान गमी जेहि होय शरीरा। ज्यों वारिधि जल अगम गम्भीरा।२५१।	सतनाम	साहेब प्रताप सत्त निजु बानी। कहों कथा सब लोक बखानी।२५२।	सतनाम
सतनाम	तुम प्रताप सभे गुन लहेऊ। विमल चरण पद पंकज गहेऊ।२५३।	सतनाम	प्रेम सुधा रस अमृत सानी। कहों सुनो कवि भेद बखानी।२५४।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - २३			
सतनाम			तब देखा सो अब देख, जिन्दा अजर अमान।		सतनाम	
			अजर अमर वोय लोक है, प्रेम प्रीति निर्वान॥			
			चौपाई			
सतनाम			दीप दीप सब कथा सुधारी। जहवाँ अजरा ज्योति संवारी।२५५।		सतनाम	
			आलस निन्द्रा तहा न होई। वर्ण अवर्ण हंस सब कोई।२५६।			
			रैनि दिवस उगे नहिं तारा। चाँद सूर्य नहिं पवन संचारा।२५७।			
सतनाम			अविगति ज्योति करे प्रकाशा। झरे अजर मनि लोक निवासा।२५८।		सतनाम	
			बीस सहस्र तहाँ पलंग कर भाऊ। अमरापुर अमर है गाँऊ।२५९।			
			तामे दीप सभो विस्तारा। दीप दीप सब पुष्प संवारा।२६०।			
सतनाम			सोरह योजन पालंग भाऊ। गंध सुगंध रहा छवि छाऊ।२६१।		सतनाम	
			तख्त सेत तहाँ सुन्दर सोहाई। जहवाँ पुरुष अमरपुर आई।२६२।			
			सत सुगंध सुख सागर खानी। बैठे हंस सुख कहे बखानी।२६३।			
सतनाम			अग्र बास तहाँ रहु निर्द्वन्दा। पुहुप सेज पर करहि आनन्दा।२६४।		सतनाम	
			सेत अमर तहाँ हंस बिराजे। सेते छत्र तहवाँ सिर छाजे।२६५।			
			सेते झलके चहुं दिशि मोती। सेत हंस है निर्मल ज्योति।२६६।			
			साखी - २४			
सतनाम			अति विलास सुख सागर, सुनो श्रवण चित्त लाय।		सतनाम	
			अमृत फल तहाँ पाइये, युग-युग क्षुधा बुताया॥			
			चौपाई			
सतनाम			अम्बु दीप अमृत की खानी। लागी झरि बरषे जनु पानी।२६७।		सतनाम	
			फुहुकार परे सब लोक समेता। कहि न जात सुख सागर एता।२६८।			
			कोताहल जहँ तहँ सब करई। अमर होय कबहिं नहिं मरई।२६९।		सतनाम	
			दया दीप सुख सागर खानी॥ हंस बोलहिं सुख अमृत बानी।२७०।			
सतनाम			दया दीप सुकृत कंह दीन्हा। प्रेम प्रीति सत्त पुरुषहिं चीन्हा।२७१।		सतनाम	
			राव रंक की डर नहिं आवै। रोग दोष तहवाँ नहिं धावै।२७२।			
			पुहुप दीप जहाँ पुष्प बेवाना। क्षण क्षण वृगसे पुष्प अमाना।२७३।			
सतनाम			गन्ध सुगन्ध डांक सब धावै। बैठे हंस सदा सुख पावै।२७४।		सतनाम	
			पुहुप पलंग सबन्हि के बासा। आवै घ्राणि लपट चहुं पासा।२७५।			
			14			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
अति सुगन्ध सुन्दर है दीपा। रहे सहज जहाँ अग्र सनीपा।२७६।	पायर दीप चौकि चहुं पासा। छापा सनदि सत्त प्रकाशा।२७७।	कामिनी रूप कहा नहिं जाई। अति सुन्दर छवि बैन सोहाई।२७८।	लोल कपोल सुन्दर अति नैना। दशन चमके बोलत बैना।२७९।	चीखुर चीखुर मोती गुहि डारी। श्रवण झलके मनि जनु बारी।२८०।	नख सिख लाल रतन जनु लागे। भुजा सुन्दर मनि मानिक जागे।२८१।	अमर झलाझलि पेन्हे सोई। मानो डांक सुधा सब होई।२८२।
मंगल गावहिं कोकिल बानी। शोभा किमि कहि जात बखानी।२८३।	देखी हंस बंश सुखा लागा। काम क्रोध तहवाँ नहिं जागा।२८४।	छन्द - ६	अति झलाझलि ज्योति निर्मल, कहि न जात मुख बैनहीं।	अति सुगंध परिमल तहाँ, लै लपट चहुं ओर धावहीं॥	पुहुप वृगसित विविधि बानी, संजन सुखद सोहावहीं।	ज्योति जगमग छत्र फिरे, पदुम झलाझलि आवहीं॥
सोरठा - ६	शोभा अगम अपार, कहि न जात मुख बैनहिं।	वेद न पावहिं पार, जौं मुख होहिं सहस्र फनि॥	चौपाई	विष्णु बैकुण्ठ सिंहासन राजे। मन्दिर धाम तहाँ छवि छाजे।२८५।	नारद शारद और महेशा। गणपति गौरि आदि गनेशा।२८६।	हरि भक्तहिं बैकुण्ठ विचारा। राम नाम निज ज्ञान सुधारा।२८७।
सो बैकुण्ठ अचल नहिं भाई। फिरि भर्मे चौरासी जाई।२८८।	अचल पद के सब मिलि लागे। मन मत योग सबे मिलि जागे।२८९।	चौरासी कबहिं नहिं छूटे। धरि-धरि काल गर्भ महं लूटे।२९०।	ब्रह्म लोक ब्रह्मा स्नाना। तहां काल फेरि करे पयाना।२९१।	इन्द्र लोक कह दानी धावै। दान करे फल इहई पावै।२९२।	एक निरंजन सबहि नचावै। चीन्हें बिना कोई मुक्ति न पावै।२९३।	झूठ जाने झूठा है सोई। शब्द विचार करहिं नर लोई।२९४।
सत्त वचन सुनो सत्त सन्ता। ज्ञान चिन्हें बिनु मन अनन्ता।२९५।						

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - २५			
सतनाम			ज्ञान विचारहु एक रस, प्रेम सुधा सम पाय। सतगुरु सदा समीप है, विवरण करो बनाय॥			सतनाम
			चौपाई			
सतनाम			सत्त पुरुष मिले मोहिं आई। उन्हीं सब भेद कहा समुदाई।२६६।			सतनाम
			सत्त वचन लिखा निजु ज्ञाना। सन्त समुझि लेहु पद निर्बाना।२६७।			
			ब्रह्म पुनीत सोई हम जाना। चौरासी नहिं करे पयाना।२६८।			
सतनाम			चौरासी कबहीं नहिं जाई। फेरि फेरि ज्ञान भक्ति लवलाई।२६९।			सतनाम
			जो जीव जाय चौरासी जन्में। कल्प कोटि तहवाँ फेरि भर्मे।३००।			
			द्रुग दानी है यम जगाती। जीवन बांधि करे उतपाती।३०१।			
सतनाम			सत्तनाम विमल पद पावै। चौरासी कबहिं नहिं आवै।३०२।			सतनाम
			नाम निःअक्षर निर्मल डोरी। तासे काल करे नहिं चोरी।३०३।			
			साखी - २६			
सतनाम			कहे दरिया जग आयेवो, सन्तन्हि के हित लागि। जिन्ह जिन्ह शब्द बिचारिया, त्रिगुण माया त्यागि॥			सतनाम
			चौपाई			
सतनाम			वोये साहेब हैं अजर अडोला। हाथ पाँव वचन मुख बोला।३०४।			सतनाम
			उर भुजा दशन है आँखी। सत्त वचन लिखा यह साखी।३०५।			
			रेखा रूप उदित उजियारा। वोये कर्ता हैं असल करारा।३०६।			
सतनाम			कहे दरिया निश्चय हम देखा। लिखा ज्ञान निजु बचन सुलेखा।३०७।			सतनाम
			मच्छ कच्छ नहिं ब्राह्म स्वरूपा। वोये साहेब हैं अविगति रूपा।३०८।			
सतनाम			बावन रूप नहिं बलि के जांचेउ। पैठि पताल नाग नहिं नाथेउ।३०९।			सतनाम
			नहिं देवकी घर जन्मेवो बारा। नहिं कंस हतेवो प्रचारा।३१०।			
			नहिं गोवर्धन कर गहि लीन्हा। नहिं गोपिन्ह संग क्रीडा कीन्हा।३११।			
सतनाम			नहिं हिरण्यकशिपु वोद्र विदारा। दैत अनेक नहि छलि मारा।३१२।			सतनाम
			नहिं निःकलंकी धरे शरीरा। नहीं तेग कर लीन्हों वीरा।३१३।			
			साखी - २७			
सतनाम			वोये साहिब सामर्थ्य हैं, हारि जीति नहिं जाय। उपजी बिनसी खपे नहीं, मातु-पिता नहिं भाय॥			सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	उपजे खापे सो दूजा भाई। दूजा माया जगत् भरमाई।३१४।	सतनाम	रजगुण तमगुण तामस देहा। त्रिगुण लीला होखे फेरि खेहा।३१५।	सतनाम	प्रबल माया कोई अन्त न पावै। वेद विदित करि या जग गावै।३१६।	सतनाम
सतनाम	निरंजन की गति बूझे न कोई। पढ़ि पण्डित ज्यों वेद बिलोई।३१७।	सतनाम	अठारह पुराण और भागवत् गीता। शास्त्र पढ़े सो बहुत पुनीता।३१८।	सतनाम	नेम धर्म काशी स्थाना। अरुझे पण्डित वेद बखाना।३१९।	सतनाम
सतनाम	काशी योग जाप जाप सब करई। मोहिनी रूप सभे बुद्धि छरई।३२०।	सतनाम	दूजा कर्ता जल के थापा। मोक्ष मुक्ति मेटहिं सब पापा।३२१।	सतनाम	तातल शीतल होय मलीना। धूप तवै जल होखे छीना।३२२।	सतनाम
सतनाम	बरिषो मेघ बहुत बढ़ियाई। ताके सब कर्ता ठहराई।३२३।	सतनाम	साखी - २८	सतनाम	अरुझे भेष अलेख सब, अस्सीवरना के तीर।	सतनाम
सतनाम	सत्त शब्द चीन्हें बिना, फेरि फेरि धरे शरीर॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबहिं नहिं जाई।३२४।	सतनाम
सतनाम	नाम चीन्है बिनु कोई न बांचे। देह धरि धरि भौ जल नाचे।३२५।	सतनाम	ताके खोजहु सब कर मूला। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६।	सतनाम	वोय साहेब सतपुरुष अमाना। आदि अन्त सत्त परवाना।३२७।	सतनाम
सतनाम	छन्द - ७	सतनाम	गहु मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं।	सतनाम	चहि चहि चाखहिं विमल रस, यह संत सो सुख पावहीं॥	सतनाम
सतनाम	पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं।	सतनाम	छकित भौ मन गगन झरि तहां, झलक पलक में आवहीं॥	सतनाम	सोरठा - ७	सतनाम
सतनाम	सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे।	सतनाम	निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ३१			
सतनाम			सूर्य चन्द्र सब पास हैं, बूझहु पण्डित राज।		सतनाम	
			विजय लगन के जानिये, सफल होय सब काज॥			
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
			धुरन्धार पवन बहे दिन राती। कतहिं नेम कतहिं उत्पाती।३५१।			
सतनाम			गन्ध पवन फूलन्हि में बासा। गन्ध सुगन्ध सब करे निवासा।३५२।		सतनाम	
			मनोरथ पवन काम संग रहई। योग भोग सब आपहि करई।३५३।			
सतनाम			त्रिकुटि विन्द काम कर थाना। मेरुदण्ड होय करे पयाना।३५४।		सतनाम	
			मूल मंगल पवन है रासी रज विन्द ले पिंड प्रगासी।३५५।			
सतनाम			जबहिं योग त्रिया कह आवै। मूल मंगल तब जीव संग धावै।३५६।		सतनाम	
			रज बिन्द एक धार होई। पवन प्रान ले पैठे सोई।३५७।			
सतनाम			तुरे पवन पांव में रहई। चलत पांव को रक्षा करई।३५८।		सतनाम	
			तुरुता नन्द पवन है खानी। रस गोरस अमृत सब आनी।३५९।			
सतनाम			मंगल मूल है पवन सुधारा। विमल विमल पद करे विचारा।३६०।		सतनाम	
			दस पवन रहे तब राधी। योगी योग युक्ति से साधी।३६१।			
सतनाम			छन्द - ८		सतनाम	
			आदि अन्त सब पवन पानी, जल थल सबे बनावहीं।			
सतनाम			अंडुज पिंडुज द्रुमलता, पवन ते सुख पावहीं॥		सतनाम	
			पवन पानी पिण्ड रक्षा, प्रेम प्रीति लगावहीं।			
सतनाम			अन्न भूषण पवन पानी, मन अनन्त होय धावहीं॥		सतनाम	
			सोरठा - ८			
सतनाम			मूल नाम गति पार, कथा बहुत विस्तार है।		सतनाम	
			सन्तहि करो विचार, संसे काल बिसारि के।			
सतनाम			ग्रन्थ अमर सार पूर्ण		सतनाम	
			19			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम